

[2023] 3 एस. सी. आर. 644

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

ए.

सुपर शानदार उपकरण और ओआरएस।

बी.

के. मोहन राव

(2012 की सिविल अपील संख्या 6216)

बी.

02 मार्च, 2023

**[एस. रवींद्र भाट और दीपांकर दत्ता, जे. जे.]**

मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, 1996:धारा 34-मध्यस्थता अधिनिर्णय को दरकिनार करते हुए-पक्षकारों के बीच भागीदारी खातों के संबंध में विवाद जिसे मध्यस्थता के लिए संदर्भित किया गया है-एक जवाबी दावे के रूप में, अपीलकर्ता फर्म के जीवित भागीदार ने आरोप लगाया कि प्रत्यर्थी ने खातों को गलत बनाया था और बड़ी राशि की हेराफेरी की थी-मध्यस्थ ने निष्कर्ष निकाला कि प्रत्यर्थी धोखाधड़ी का दोषी था-प्रत्यर्थी द्वारा पुरस्कार को दरकिनार करने के लिए आवेदन-उच्च न्यायालय के एकल न्यायाधीश द्वारा खारिज-उच्च न्यायालय की खंड पीठ ने मध्यस्थ की 21 साल के खातों को देखने और पीछे की ओर बढ़ने की विधि को अस्थिर माना और सार्वजनिक नीति के आधार पर पुरस्कार को दरकिनार कर दिया-अपील पर अभिनिर्धारित किया गया:अपीलार्थी को कथित धोखाधड़ी की जानकारी थी, लेकिन उसने ऐसी जानकारी की तारीख से 3 साल से अधिक समय तक अपने दावे को सकारात्मक रूप से लागू करने का कोई प्रयास नहीं किया-इसके अलावा, धोखाधड़ी के आरोप पर कोई विशिष्ट कथन नहीं-इस प्रकार, उच्च न्यायालय की खंड पीठ द्वारा पुरस्कार को रद्द करने में कोई त्रुटि नहीं हुई।

सी.

डी.

ई.

सीमा अधिनियम, 1963 -धारा 17-धोखाधड़ी या गलती का प्रभाव-सीमा की अवधि की शुरुआत-आयोजित:धारा 17 इस नियम का एक अपवाद है कि सीमा की अवधि कार्रवाई के कारण की तारीख से शुरू होती है-हालांकि, जहां प्रावधान के तहत विचार की गई शर्त मौजूद है (जैसे धोखाधड़ी), तो विशिष्ट अभिकथनों के आधार पर सबूत के अधीन, तारीख जब सीमा देखी जाने लगती है, वह वादी की जानकारी की तारीख है।

एफ.

वल्लभ ग्लास वर्क्स लिमिटेड बनाम.भारत संघ **[1984] 3 एस. सी. आर. 180;** बिक्री कर आयुक्त, उत्तर प्रदेश बनाम औरिया चैंबर्स ऑफ कॉमर्स, इलाहाबाद **[1986] 2 एस. सी. आर. 430;** आर. राधा बाई और अन्य। वी.पी. अशोक कुमार और अन्य। **[2018]**

जी.

**12 एस. सी. आर. 143-**पर निर्भर।

एच.

644 ए.

645

सुपर डायमॉन्ड टूल्स एंड ओआरएस।के. मोहन राव ए

मामला कानून संदर्भ

**[1984] 3 एससीआर 180**

उस पर भरोसा करें

पैरा **10**

**[1986] 2 एससीआर 430**

उस पर भरोसा करें

पैरा **10**

**[2018] 12 एससीआर 143**

उस पर भरोसा करें

पैरा **10**

बी.

सिविल अपीलिय न्यायनिर्णय:2012 की सिविल अपील सं. 6216।

2007 के ओ. एस. ए. सं. 67 में मद्रास उच्च न्यायालय के दिनांक 29.09.2008 के निर्णय और आदेश से।

आर. आनंद पद्मनाभन, प्रमोद दयाल, अधिवक्ता।अपीलार्थीगण के लिए।पी. आई. जोस, प्रत्यर्थी के लिए अधिवक्ता।

सी.

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

एस. रवींद्र भाट, जे.

1. वर्तमान अपील मद्रास उच्च न्यायालय के उस आदेश पर सवाल उठाती है जिसने उस न्यायालय के एक विद्वान एकल न्यायाधीश के निष्कर्षों को परेशान कर दिया था।एकल न्यायाधीश ने मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, 1996 की धारा 34 के तहत प्रतिवादी की याचिका को खारिज कर दिया था; खंड पीठ ने एकल न्यायाधीश के आदेश को दरकिनार कर दिया और एक नए मध्यस्थ की नियुक्ति की।

डी.

2. इस मामले में पुरस्कार मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा 28.08.1997 पर एक संदर्भ के अनुसार दिया गया था।दोनों पक्षों के बीच विवाद साझेदारी खातों के संबंध में था।अपीलार्थी के जीवित साथी ने आरोप लगाया कि पहला प्रत्यर्थी खातों के जालीकरण का दोषी था और उसने बड़ी राशि का गबन किया था।दोनों पक्षों ने विवाद को सौहार्दपूर्ण तरीके से निपटाने के विचार के साथ बातचीत शुरू की थी।लेकिन, कोई हल नहीं निकला।नतीजतन, प्रत्यर्थी ने अधिनियम की धारा 11 के तहत उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया, जो संदर्भ में समाप्त हुआ।

ई.

एफ.

3. एकमात्र मध्यस्थ वाले मध्यस्थ न्यायाधिकरण ने अभिवचनों और साक्ष्य की जांच की और निष्कर्ष निकाला कि पहला प्रत्यर्थी जैसा कि आरोप लगाया गया था, दोषी था।दिलचस्प बात यह है कि अपीलार्थी ने किसी दावे को प्राथमिकता नहीं दी, और इसके बजाय पहले प्रत्यर्थी के कहने पर शुरू की गई मध्यस्थता कार्यवाही के दौरान जवाबी दावा किया।मध्यस्थ न्यायाधिकरण ने अपने निष्कर्षों के आधार पर कहा कि पहले प्रतिवादी के हिस्से की कटौती करने के बाद कुल 76,34,423.86 की राशि का विधिवत हिसाब लगाया जाना चाहिए। राशि '53,87,664.40-थी।

जी.

एच.

646

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

4. मध्यस्थ ने मध्यस्थता शुरू होने की तारीख तक 18 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज और उसी दर पर भविष्य के ब्याज का भुगतान करने का भी निर्देश दिया। धारा 34 के तहत पहले प्रतिवादी के आवेदन को एकल न्यायाधीश द्वारा खारिज कर दिया गया था। इसलिए, उन्होंने डिवीजन बेंच का दरवाजा खटखटाया, जिसने विवादित आदेश द्वारा कहा कि पुरस्कार को बनाए नहीं रखा जा सकता क्योंकि यह सार्वजनिक नीति के विपरीत था। इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए, डिवीजन बेंच की राय थी कि मध्यस्थ द्वारा पीछे की ओर बढ़ने और 21 साल की अवधि के लिए लेखा लेने में अपनाई गई विधि अस्थिर थी।

बी.

5. इस न्यायालय ने पक्षकारों के अधिवक्ता को सुना है। अपीलार्थी की ओर से अधिवक्ता श्री आर. आनंद पद्मनाभन ने प्रस्तुत किया कि दोनों पक्ष एक तटस्थ लेखा परीक्षक की नियुक्ति के लिए सहमत हुए थे। पक्षकारों को उनके अपने लेखा परीक्षक द्वारा भी सहायता प्रदान की गई और सर्वसम्मति के आधार पर लेखांकन की दिशा में अपनाई गई विधि पर निर्णय लिया गया। इस सामग्री पर न्यायाधिकरण द्वारा वस्तुनिष्ठ रूप से विचार किया गया था, जो इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि पहला प्रत्यर्थी सबसे पहले, अति-चालान और दूसरा, गुप्त रूप से व्यापार करने का दोषी था, जिसके परिणामस्वरूप साझेदारी फर्म को नुकसान हुआ। इस निष्कर्ष और सहमत तटस्थ लेखा परीक्षक की गणना के आधार पर, न्यायाधिकरण द्वारा आंकड़ों को स्वीकार कर लिया गया। यह तर्क दिया गया था कि इन परिस्थितियों में, प्रथम प्रत्यर्थी यह तर्क नहीं दे सकता था कि पुरस्कार सार्वजनिक नीति के विपरीत था।

सी.

डी.

6. विद्वान अधिवक्ता ने यह आग्रह करने के लिए सीमा अधिनियम, 1963 की धारा 17 पर भी भरोसा किया कि धोखाधड़ी सभी को उजागर करती है, और इस मामले में चूंकि जवाबी दावे में धोखाधड़ी का आरोप लगाया गया था और मध्यस्थ द्वारा पाया गया था, इसलिए पुरस्कार में गलती नहीं पाई जा सकती थी। इसलिए, कानून में ऐसी कोई त्रुटि नहीं थी जो सार्वजनिक नीति के विपरीत हो।

ई.

7. प्रथम प्रत्यर्थी की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता श्री जोस ने बताया कि अपीलार्थी ने वास्तव में संदर्भ की मांग नहीं की थी, बल्कि यह पहला प्रत्यर्थी था जिसने यह दावा किया था। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह आग्रह किया गया था कि इस मामले के तथ्यों में, अपीलार्थी को कथित अति-चालान और अन्य कदाचारों की जानकारी थी, जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 1993 में साझेदारी फर्म से पहले प्रत्यर्थी को बाहर कर दिया गया था। 8. उन्होंने पक्षों के बीच पत्राचार पर भरोसा किया और तर्क दिया कि सुलह की मांग फरवरी, 1994 के दूसरे सप्ताह में की गई थी। इसलिए, जब 1997 में संदर्भ दिया गया था और जब दावा किया गया था, तभी अपीलार्थी ने दिसंबर, 1997 में जवाबी दावा किया था। इसलिए, यह प्रस्तुत किया गया था कि ए पर भी

एफ.

जी.

एच.

647

सुपर डायमंड टूल्स एंड ओआरएस. v. के. मोहन राव [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

धारा 17 के अंतर्निहित सिद्धांत को लागू करने के लिए दावा समय से प्रतिबंधित था।

9. विवादित आदेश पूरी तरह से इस तथ्य पर आधारित था कि पुरस्कार 21 वर्षों के लिए खातों के काम करने के आधार पर देनदारियों को स्पष्ट करने का प्रयास करता था। डिवीजन बेंच ने आगे देखा कि मध्यस्थ की नियुक्ति की गई थी, जिसके अनुसार अपीलार्थी ने जवाबी दावा किया। रिकॉर्ड से पता चलता है कि जवाबी दावे में कथनों के संदर्भ में, पहले प्रत्यर्थी ने दिसंबर, 1993 में एक भागीदार के रूप में काम करना बंद कर दिया था। हालाँकि ऐसा प्रतीत होता है कि मार्गों का विभाजन जनवरी, 1994 की शुरुआत में हुआ था, लेकिन तथ्य यह है कि उस समय और दिसंबर, 1997 के बीच अपीलार्थी की ओर से अपने दावे को सकारात्मक रूप से लागू करने का कोई प्रयास नहीं किया गया था। इसके अलावा, जवाबी दावे में दलीलें भी धोखाधड़ी के आरोपों के संबंध में विशिष्ट नहीं हैं। जिस आधार पर जवाबी दावा अंततः सफल हुआ, वह था एक ओर अति-चालान और दूसरी ओर प्रतिवादी की पत्नी के व्यवसाय में हीरे जैसे कच्चे माल का उपयोग, जिसके परिणामस्वरूप साझेदारी फर्म के लाभ को कम किया गया।

बी.

सी.

डी.

10. जवाबी दावे में आरोप केवल इस प्रभाव के लिए हैं कि पहले प्रत्यर्थी ने अपीलार्थी की फर्म छोड़ने के 6 महीने के भीतर एक फर्म की स्थापना की। सीमा अधिनियम की धारा 17 इस नियम का एक अपवाद है कि सीमा की अवधि कार्रवाई के कारण की तारीख से शुरू होती है। हालांकि, जहां धारा 17 के तहत विचार की गई शर्त-जैसे कि धोखाधड़ी मौजूद है, तो धोखाधड़ी के प्रमाण (विशिष्ट कथनों के आधार पर) के अधीन वह तारीख जब सीमा दिखाई देने लगती है, वादी की जानकारी की तारीख होती है। इस न्यायालय द्वारा अपने आदेश में लगातार पालन किए जाने वाले सिद्धांत

ई.

श्री वल्लभ ग्लास वर्क्स लिमिटेड जैसे पिछले निर्णय। भारत संघ 1 और बिक्री कर आयुक्त, यूपी बनाम औरिया चैंबर्स ऑफ

एफ.

वाणिज्य, इलाहाबाद 2 यह है कि धोखाधड़ी-या इस तरह की धोखाधड़ी-के बारे में जानकारी की तारीख सीमा के लिए प्रारंभिक बिंदु है। इसके अलावा, यह आयोजित किया गया है

आर. राधा बाई और अन्य बनाम में इस न्यायालय द्वारा पी. अशोक कुमार और अन्य। 3 वह सीमा अधिनियम की धारा 17:

“सीमा अवधि का विस्तार या उल्लंघन नहीं करता है। यह केवल सीमा अवधि को स्थगित या स्थगित करता है। यह वाक्यांश से स्पष्ट है “सीमा की अवधि चलना शुरू नहीं होगी।”

जी.

1 [1984] 3 एस. सी. आर. 180 2 [1986] 2 एस. सी. आर. 430 3 [2018] 12 एस. सी. आर. 143

एच.

648

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

11. इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि अपीलार्थी (अपने जीवित भागीदार के माध्यम से) ने कथित धोखाधड़ी के बारे में अपनी जानकारी की तारीख से 3 साल से अधिक समय तक अपना दावा किया, इस अदालत की राय है कि विवादित आदेश, जिस हद तक वह पुरस्कार को खारिज करता है, हालांकि एक अपील में, कानून की त्रुटि नहीं है।

12. उपरोक्त कारणों से, अपील विफल हो जाती है और तदनुसार खारिज कर दी जाती है। लंबित आवेदनों, यदि कोई हों, का निपटारा कर दिया जाता है।

बी.

निधि जैन

याचिका खारिज कर दी गई।

(सहायक: वेद सिंह, एलसीआरए)

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.